ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 5, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और महात्मा गांधी

श्रीमती सुमन कुमारी

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय शाकम्भर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सांभर लेक, जयपुर, राजस्थान

सार

गांधी जी द्वारा बताई गई कुछ प्रसिद्ध सूक्तियां

"अहिंसा सबसे बड़ा कर्तव्य है। यदि हम इसका पूरा पालन नहीं कर सकते हैं तो हमें इसकी भावना को अवश्य समझना चाहिए और जहां तक संभव हो हिंसा से दूर रहकर मानवता का पालन करना चाहिए।"
"उस प्रकार जिएं कि आपको कल मर जाना है। सीखें उस प्रकार जैसे आपको सदा जीवित रहना हैं।"
"आजादी का कोई अर्थ नहीं है यदि इसमें गलतियां करने की आजादी शामिल न हों।"
"बेहतर है कि हिंसा की जाए, यदि यह हिंसा हमारे दिल में हैं, बजाए इसके कि नपुंसकता को ढकने के लिए अहिंसा का शोर मचाया जाए।"
"व्यक्ति को अपनी बुद्धिमानी के बारे में पूरा भरोसा रखना बुद्धिमानी नहीं है। यह अच्छी बात है कि याद रखा जाए कि सबसे मजबूत भी कमजोर हो सकता है और बुद्धिमान भी गलती कर सकता है।"
"आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक समुद्र है, यदि समुद्र की कुछ बूंदें सूख जाती है तो समुद्र मैला नहीं होता।"
"ईमानदार मतभेद आम तौर पर प्रगति के स्वस्थ संकेत हैं।"

परिचय

भारत का संविधान संविधान सभा की देन है। इसे राष्ट्रवादी आंदोलन से एक ठोस वैचारिक आधार और सिद्धांत विरासत में मिले हैं। 1909 में, महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में उल्लेख किया था कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीय जनता के सहयोग से स्थापित किया गया था और इसी कारण से इतने लंबे समय तक कायम रहा। इस प्रकार, गांधीजी ने पूरे भारत में एक असहयोग आंदोलन की योजना बनाई, जो धीरे-धीरे सामने आएगा। इसकी शुरुआत, विभिन्न सरकारी उपाधियों के समर्पण और सिविल सेवाओं, सेना, पुलिस, अदालतों और विधान परिषदों, स्कूलों और विदेशी उत्पादों के बहिष्कार से होनी चाहिए। [1]

महात्मा गांधी सबसे प्रभावशाली नेता और श्रद्धेय व्यक्ति हैं जिन्होंने ब्रिटिश राज के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात में हुआ था। भारत को आज़ाद कराने की लड़ाई कई सालों से लड़ी जा रही थी, लेकिन गांधी जी ने उस लड़ाई को एक दिशा दी और पूरे देश को एक साथ ला दिया। वह एक उपनिवेशवाद विरोधी, अहिंसक स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने बिना कोई हथियार उठाए देश को आजादी की ओर अग्रसर किया। वह सत्य या सत्य की शक्ति में विश्वास करते थे। इस प्रकार उन्होंने अपने आन्दोलन का नाम 'सत्याग्रह' रखा। गांधी जी के विश्वास और सत्य के लिए संघर्ष से उन्हें सार्वभौमिक समर्थन मिला। वे अहिंसा सहयोग के प्रवर्तक थे। उन्होंने इसे बड़े पैमाने पर राजनीतिक जनता पर लागू किया और एक प्रभावी परिणाम प्राप्त किया। वह उन पहले नेताओं में से एक थे जिन्होंने उपवास योजना को एक राजनीतिक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया।

चंपारण सत्याग्रह (1917)
गांधीजी का पहला सविनय अवज्ञा आंदोलन चंपारण सत्याग्रह था। नील की खेती करने वाले किसान राजकुमार शुक्ला के समझाने पर गांधीजी ने बिहार के चंपारण की यात्रा की, ताकि वहां के किसानों की दुर्दशा का पता लगाया जा सके। यूरोपीय लोगों ने बिहार के चंपारण जिले में किसानों को नीले रंग की नील की खेती करने के लिए मजबूर किया, जिससे उन्हें काफी पीड़ा हुई। वे अपनी ज़रूरत के भोजन की खेती नहीं कर सकते थे, और उनका नील भुगतान अपर्याप्त था।

चम्पारण सत्याग्रह का परिणाम
बाद में सरकार ने किसानों के दावों की जांच के लिए एक आयोग नियुक्त किया। पूछे जाने पर गांधीजी ने समिति में काम करना स्वीकार कर लिया। परिणामस्वरूप, कुछ ही महीनों में चंपारण कृषि विधेयक पारित हो गया। कृषकों और भूमि किरायेदारों को बहुत राहत मिली।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

रौलट एक्ट सत्याग्रह (1919)
मार्च 1919 में, रोलेट एक्ट, जिसे 1919 के अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम के रूप में भी जाना जाता है, को मंजूरी दी गई थी। इस विधेयक के द्वारा इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल ने ब्रिटिश सरकार को आतंकवाद के किसी भी आरोपी को गिरफ्तार करने का अधिकार दे दिया। इसने ब्रिटिशों को लोगों को बिना मुकदमा चलाए दो साल तक हिरासत में रखने का भी अधिकार दिया। इसके अलावा, पुलिस को बिना वारंट के किसी भी स्थान की तलाशी लेने की अनुमति दी गई है।

अप्रैल 1919 में, गांधीजी ने इस अधिनियम के खिलाफ देशव्यापी सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया। इसे बड़े पैमाने पर प्रतिक्रिया मिली और पहले से ही खराब सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से पीड़ित लोग पूरे देश से समर्थन में सामने आए।

असहयोग आंदोलन (1920)
असहयोग आंदोलन 04 सितंबर 1920 को महात्मा गांधी के नेतृत्व में शुरू किया गया एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन था। यह आंदोलन जलियांवाला बाग हत्याकांड और रोलेट एक्ट के पारित होने जैसी कई घटनाओं के मद्देनजर शुरू किया गया था।

यह आंदोलन जनता की सहानुभूति अर्जित करने में सफल रहा और गांधीजी को प्रतिरोध के नेता के रूप में स्थापित किया। यह केवल दो वर्षों के लिए सक्रिय था और चौरी चौरा घटना के कारण भंग कर दिया गया था।

ख़िलाफ़त अंक (1919 – 1925)
जबकि जलियांवाला बाग हत्याकांड जैसी घटनाओं ने भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना को प्रज्वलित किया, लेकिन सत्याग्रह आंदोलन अभी भी बड़े शहरों और कस्बों तक ही सीमित थे। गांधीजी को अधिक व्यापक आधार वाले आंदोलन की आवश्यकता का एहसास हुआ। उनका मानना था कि आजादी तभी संभव है जब हिंदू और मुस्लिम एक मंच पर एकजुट होंगे। खिलाफत मुद्दे या खिलाफत आंदोलन ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति दी। प्रथम विश्व युद्ध, जिसने भारत की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को तहस-नहस कर दिया था, ने दुनिया भर के देशों को भी नष्ट कर दिया था। उन साम्राज्यों में ओटोमन तुर्की भी शामिल था, जिसने भयानक हार देखी।

ऐसी अफवाहें थीं कि अंग्रेजों ने ओटोमन सम्राट, जो इस्लामी दुनिया का आध्यात्मिक प्रमुख, खलीफा था, पर एक कठोर संधि - सेवर्स की संधि - थोप दी थी। मार्च 1919 में भारतीय मुसलमानों द्वारा अपने खलीफा की रक्षा के लिए तत्कालीन बंबई में एक खिलाफत समिति का गठन किया गया था। मोहम्मद अली और मौलाना शौकत अली ने शेख शौकत अली सिद्दीकी, पीर गुलाम मुजद्दिद सरहंदी और डॉ. हकीम अजमल खान जैसे प्रमुख मुस्लिम नेताओं से हाथ मिलाया और भारत खिलाफत कमेटी का निर्माण किया। इसका उद्देश्य मुसलमानों के बीच राजनीतिक एकता बनाना और खलीफा की रक्षा के लिए अपने प्रभाव का उपयोग करना था।

अवज्ञा आंदोलन (1930)
भारतीय वैधानिक आयोग, जिसे साइमन कमीशन के नाम से जाना जाता है, को सविनय अवज्ञा आंदोलन के उत्प्रेरक के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह भारत में संवैधानिक सुधार पर बहस करने के लिए निर्धारित किया गया था, जिसे एक भी भारतीय सदस्य के बिना किया गया था, जिससे एक बड़ा विरोध हुआ। लेकिन भारत में आने से पहले, कांग्रेस आंतरिक बहस से घिरी हुई थी और उसके पास दो विकल्प थे:

- मोतीलाल नेहरू और सीआर दास जैसे उदारवादी प्रांतीय चुनाव लड़ना चाहते थे और परिषदों (भारत सरकार अधिनियम, 1919 द्वारा स्थापित) के भीतर अंग्रेजों का विरोध करना चाहते थे।
- जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों ने जन आंदोलन और पूर्ण स्वतंत्रता का आग्रह किया।

आयोग के आगमन और विश्वव्यापी आर्थिक मंदी की शुरुआत के साथ बिगड़ती आर्थिक स्थिति ने क्रांतिकारियों की मांगों को प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप सविनय अवज्ञा आंदोलन हुआ।

भारत छोड़ो आंदोलन
महात्मा गांधी ने 08 अगस्त, 1942 को मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की।

- 08 अगस्त को, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पर हस्ताक्षर किए और महात्मा गांधी को आंदोलन के नेता के रूप में चुना

- 'भारत छोड़ो संकल्प' में आंदोलन के प्रावधानों के रूप में निम्नलिखित कहा गया- ब्रिटिश शासन का तत्काल अंत, एक स्वतंत्र भारत की घोषणा जो साम्राज्यवाद और फासीवाद के खिलाफ अपनी रक्षा कर सके, ब्रिटिश वापसी की स्थिति में एक अंतरिम सरकार का गठन, और सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत[2]
- इस आंदोलन ने निम्नलिखित नारों को जन्म दिया-
  - यूसुफ मेहरअली द्वारा 'भारत छोड़ो'। मेहरअल्ली को 1942 में बंबई के मेयर के रूप में चुना गया था और वह एक प्रमुख समाजवादी और ट्रेड यूनियनवादी थे
  - 'करो या मरो' का नारा महात्मा गांधी ने 8 अगस्त को अपने भाषण के दौरान दिया था
- अगस्त क्रांति मैदान में अपने भाषण के दौरान गांधीजी ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों को निम्नलिखित कार्य करने का निर्देश दिया-
  - गांधीजी ने सरकारी कर्मचारियों को कांग्रेस के प्रति अपनी वफादारी का प्रचार करने का निर्देश दिया
  - उन्होंने सेना के जवानों को हमवतन लोगों पर गोली चलाने से परहेज करने का निर्देश दिया
  - उन्होंने किसानों को निर्देश दिया कि वे सहमत लगान केवल उन सरकार विरोधी जमींदारों को ही अदा करें
  - उन्होंने रियासतों के लोगों को निर्देश दिया कि वे केवल सरकार विरोधी नेताओं का समर्थन करें और अपनी संप्रभुता को भारतीय राष्ट्र का हिस्सा घोषित करना चाहें

राष्ट्र के निर्माण में भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसने संवैधानिक सभा के सदस्यों को भारतीय संविधान के मुख्य सिद्धांतों का मसौदा तैयार करने में मदद की। इसका निर्माण ब्रिटिश, अमेरिकी और जर्मन जैसे विभिन्न संविधानों के अवलोकन और अपनाने के माध्यम से किया गया था। इसके अलावा, वस्तुनिष्ठ संकल्प को अपनाने से भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में मदद मिली है।

विचार-विमर्श

मोहनदास करमचन्द गांधी (2 अक्टूबर 1869-30 जनवरी 1948) भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह (व्यापक सविनय अवज्ञा) के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव सम्पूर्ण अहिंसा के सिद्धान्त पर रखी गयी थी जिसने भारत को आजादी दिलाकर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता के प्रति आन्दोलन के लिये प्रेरित किया।[3] उन्हें दुनिया में आम जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत भाषा में महात्मा अथवा महान आत्मा एक सम्मान सूचक शब्द है। गांधी को महात्मा के नाम से सबसे पहले 1915 में राजवैद्य जीवराम कालिदास ने संबोधित किया। उन्हें बापू यानी पिता के नाम से भी याद किया जाता है। सुभाष चन्द्र बोस ने 6 जुलाई 1944 को रंगून रेडियो से गान्धी जी के नाम जारी प्रसारण में उन्हें राष्ट्रपिता कहकर सम्बोधित करते हुए आजाद हिन्द फौज के सैनिकों के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगीं थीं। प्रति वर्ष 2 अक्टूबर को उनका जन्म दिन भारत में गांधी जयंती के रूप में और पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है। सबसे पहले गान्धी ने प्रवासी वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिये संघर्ष हेतु रोजगार करना शुरू किया। 1915 में उनकी भारत वापसी हुई। उसके बाद उन्होंने यहाँ के किसानों, मजदूरों और शहरी श्रमिकों को अत्यधिक भूमि कर और भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाने के लिये एकजुट किया। 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर संभालने के बाद उन्होंने देशभर में गरीबी से राहत दिलाने, महिलाओं के अधिकारों का विस्तार, धार्मिक एवं जातीय एकता का निर्माण व आत्मनिर्भरता के लियेअस्पृश्यता के विरोध में अनेकों कार्यक्रम चलाये। इन सबमें विदेशी राज से मुक्ति दिलाने वाला स्वराज की प्राप्ति वाला कार्यक्रम ही प्रमुख था। गाँधी जी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाये गये नमक कर के विरोध में 1930 में नमक सत्याग्रह और इसके बाद 1942 में अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन से खासी प्रसिद्धि प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीका और भारत में विभिन्न अवसरों पर कई वर्षों तक उन्हें जेल में भी रहना पड़ा। गान्धी जी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिये वकालत भी की। 30 जनवरी, 1948, गांधी की उस समय गोली मारकर हत्या कर दी गई जब वे नई दिल्ली के बिड़ला भवन (बिरला हाउस के मैदान में रात चहलकदमी कर रहे थे। गांधी का हत्यारा नाथूराम गौड़से हिन्दू राष्ट्रवादी थे जिनके कट्टरपंथी हिंदु महासभा के साथ संबंध थे जिसने गांधी जी को पाकिस्तान को भुगतान करने के मुद्दे को लेकर भारत को कमजोर बनाने के लिए जिम्मेदार ठहराया था। गोड़से और उसके उनके सह षड्यंत्रकारी नारायण आप्टेको बाद में केस चलाकर सजा दी गई तथा 15 नवंबर 1949 को इन्हें फांसी दे दी गई।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

चंपारण और खेड़ा

गांधी की पहली बड़ी उपलब्धि 1918 में चम्पारन और खेड़ा सत्याग्रह, आंदोलन में मिली हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नील नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आंदोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकांश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भत्ता दिया गया जिससे वे अत्यधिक गरीबी से घिर गए। गांवों को बुरी तरह गंदा और अस्वास्थ्यकर और शराब, अस्पृश्यता और पर्दा से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिनका बोझ दिन प्रतिदिन बढता ही गया।[4] यह स्थिति निराशजनक थी। खेड़ा, गुजरात में भी यही समस्या थी। गांधी जी ने वहां एक आश्रम बनाया जहाँ उनके बहुत सारे समर्थकों और नए स्वेच्छिक कार्यकर्ताओं को संगठित किया गया। उन्होंने गांवों का एक विस्तृत अध्ययन और सर्वेक्षण किया जिसमें प्राणियों पर हुए अत्याचार के भयानक कांडों का लेखाजोखा रखा गया और इसमें लोगों की अनुत्पादकीय सामान्य अवस्था को भी शामिल किया गया था। ग्रामीणों में विश्वास पैदा करते हुए उन्होंने अपना कार्य गांवों की सफाई करने से आरंभ किया जिसके अंतर्गत स्कूल और अस्पताल बनाए गए और उपरोक्त वर्णित बहुत सी सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए ग्रामीण नेतृत्व प्रेरित किया। लेकिन इसके प्रमुख प्रभाव उस समय देखने को मिले जब उन्हें अशांति फैलाने के लिए पुलिस ने गिरफ्तार किया और उन्हें प्रांत छोड़ने के लिए आदेश दिया गया। हजारों की तादाद में लोगों ने विरोध प्रदर्शन किए ओर जेल, पुलिस स्टेशन एवं अदालतों के बाहर रैलियां निकालकर गांधी जी को बिना शर्त रिहा करने की मांग की। गांधी जी ने जमींदारों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन और हड़तालों को का नेतृत्व किया जिन्होंने अंग्रेजी सरकार के मार्गदर्शन में उस क्षेत्र के गरीब किसानों को अधिक क्षतिपूर्ति मंजूर करने तथा खेती पर नियंत्रण, राजस्व में बढोतरी को रद्द करना तथा इसे संग्रहित करने वाले एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस संघर्ष के दौरान ही, गांधी जी को जनता ने बापू पिता और महात्मा (महान आत्मा) के नाम से संबोधित किया। खेड़ा मेंसरदार पटेल ने अंग्रेजों के साथ विचार विमर्श के लिए किसानों का नेतृत्व किया जिसमें अंग्रेजों ने राजस्व संग्रहण से मुक्ति देकर सभी कैदियों को रिहा कर दिया गया था। इसके परिणामस्वरूप, गांधी की ख्याति देश भर में फैल गई।

असहयोग आन्दोलन

गांधी जी ने असहयोग, अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के खिलाफ शस्त्र के रूप में उपयोग किया। पंजाब में अंग्रेजी फोजों द्वारा भारतीयों पर जलियावांला नरसंहार जिसे अमृतसर नरसंहार के नाम से भी जाना जाता है ने देश को भारी आघात पहुंचाया जिससे जनता में क्रोध और हिंसा की ज्वाला भड़क उठी। गांधीजी ने ब्रिटिश राज तथा भारतीयों द्वारा प्रतिकारात्मक रवैया दोनों की की। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों तथा दंगों के शिकार लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा पार्टी के आरंभिक विरोध के बाद दंगों की भर्त्सना की। गांधी जी के भावनात्मक भाषण के बाद अपने सिद्धांत की वकालत की कि सभी हिंसा और बुराई को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता है।[5], किंतु ऐसा इस नरसंहार और उसके बाद हुई हिंसा से गांधी जी ने अपना मन संपूर्ण सरकार आर भारतीय सरकार के कब्जे वाली संस्थाओं पर संपूर्ण नियंत्रण लाने पर केंद्रित था जो जल्दी ही स्वराज अथवा संपूर्ण व्यक्तिगत, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक आजादी में बदलने वाला था।

दिसम्बर 1921 में गांधी जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस. का कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया। उनके नेतृत्व में कांग्रेस को स्वराज के नाम वाले एक नए उद्देश्य के साथ संगठित किया गया। पार्दी में सदस्यता सांकेतिक शुल्क का भुगताने पर सभी के लिए खुली थी। पार्टी को किसी एक कुलीन संगठन की न बनाकर इसे राष्ट्रीय जनता की पार्टी बनाने के लिए इसके अंदर अनुशासन में सुधार लाने के लिए एक पदसोपान समिति गठित की गई। गांधी जी ने अपने अहिंसात्मक मंच को स्वदेशी नीति में शामिल करने के लिए विस्तार किया जिसमें विदेशी वस्तुओं विशेषकर अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करना था।[5] इससे जुड़ने वाली उनकी वकालत का कहना था कि सभी भारतीय अंग्रेजों द्वारा बनाए वस्त्रों की अपेक्षा हमारे अपने लोगों द्वारा हाथ से बनाई गई खादी पहनें। गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन को सहयोग देने के लिएपुरूषों और महिलाओं को प्रतिदिन खादी के लिए सूत कातने में समय बिताने के लिए कहा। यह अनुशासन और समर्पण लाने की ऐसी नीति थी जिससे अनिच्छा और महत्वाकाक्षा को दूर किया जा सके और इनके स्थान पर उस समय महिलाओं को शामिल किया जाए जब ऐसे बहुत से विचार आने लगे कि इस प्रकार की गतिविधियां महिलाओं के लिए सम्मानजनक नहीं हैं। इसके अलावा गांधी जी ने ब्रिटेन

की शैक्षिक संस्थाओं तथा अदालतों का बहिष्कार और सरकारी नौकरियों को छोड़ने का तथा सरकार से प्राप्त तमगों और सम्मान को वापस लौटाने का भी अनुरोध किया।

असहयोग को दूर - दूर से अपील और सफलता मिली जिससे समाज के सभी वर्गों की जनता में जोश और भागीदारी बढ गई। फिर जैसे ही यह आंदोलन अपने शीर्ष पर पहुंचा वैसे फरवरी 1922 में इसका अंत चैरी - चोरा , उत्तरप्रदेश में भयानक द्वेष के रूप में अंत हुआ। आंदोलन द्वारा हिंसा का रूख अपनाने के डर को ध्यान में रखते हुए और इस पर विचार करते हुए कि इससे उसके सभी कार्यों पर पानी फिर जाएगा , गांधी जी ने व्यापक असहयोग [10] , के इस आंदोलन को वापस ले लिया। गांधी पर गिरफ्तार किया गया 10 मार्च , 1922 , को राजद्रोह के लिए गांधी जी पर मुकदमा चलाया गया जिसमें उन्हें छह साल कैद की सजा सुनाकर जैल भेद दिया गया। 18 मार्च , 1922 से लेकर उन्होंने केवल 2 साल ही जैल में बिताए थे कि उन्हें फरवरी 1924 में आंतों के ऑपरेशन के लिए रिहा कर दिया गया।

गांधी जी के एकता वाले व्यक्तित्व के बिना इंडियन नेशनल कांग्रेस उसके जेल में दो साल रहने के दौरान ही दो दलों में बंटने लगी जिसके एक दल का नेतृत्व सदन में पार्टी की भागीदारी के पक्ष वालेचित्त रंजन दास तथा मोतीलाल नेहरू ने किया तो दूसरे दल का नेतृत्व इसके विपरीत चलने वाले चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया। इसके अलावा , हिंदुओं और मुसलमानों के बीच अहिंसा आंदोलन की चरम सीमा पर पहुंचकर सहयोग टूट रहा था। गांधी जी ने इस खाई को बहुत से साधनों से भरने का प्रयास किया जिसमें उन्होंने 1924 की बसंत में सीमित सफलता दिलाने वाले तीन सप्ताह का उपवास करना भी शामिल था। [**6**]

स्वराज और नमक सत्याग्रह

गांधी जी सक्रिय राजनीति से दूर ही रहे और 1920 की अधिकांश अवधि तक वे स्वराज पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस के बीच खाई को भरने में लगे रहे और इसके अतिरिक्त वे अस्पृश्यता , शराब , अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ आंदोलन छेड़ते भी रहे। उन्होंने पहले 1928 में लौटे . एक साल पहले अंग्रेजी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक नया संवेधानिक सुधार आयोग बनाया जिसमें एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। इसका परिणाम भारतीय राजनैतिक दलों द्वारा बहिष्कार निकला। दिसम्बर 1928 में गांधी जी ने कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के एक अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने के लिए कहा गया था अथवा ऐसा न करने के बदले अपने उद्देश्य के रूप में संपूर्ण देश की आजादी के लिए असहयोग आंदोलन का सामना करने के लिए तैयार रहें। गांधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चंद्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे पुरूषों द्वारा तत्काल आजादी की मांग के विचारों को फलीभूत किया बल्कि अपनी स्वयं की मांग को दो साल [12] , की बजाए एक साल के लिए रोक दिया। अंग्रेजों ने कोई जवाब नहीं दिया। . नहीं 31 दिसम्बर 1929 , भारत का झंडा फहराया गया था लाहौर में है। 26 जनवरी 1930 का दिन लाहौर में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने मनाया। यह दिन लगभग प्रत्येक भारतीय संगठनों द्वारा भी मनाया गया। इसके बाद गांधी जी ने मार्च 1930 में नमक पर कर लगाए जाने के विरोध में नया सत्याग्रह चलाया जिसे 12 मार्च से 6 अप्रेल तक नमक आंदोलन के याद में 400 किलोमीटर (248 मील) तक का सफर अहमदाबाद से दांडी , गुजरात तक चलाया गया ताकि स्वयं नमक उत्पन्न किया जा सके। समुद्र की ओर इस यात्रा में हजारों की संख्या में भारतीयों ने भाग लिया। भारत में अंग्रेजों की पकड़ को विचलित करने वाला यह एक सर्वाधिक सफल आंदोलन था जिसमें अंग्रेजों ने 80,000 से अधिक लोगों को जेल भेजा।

लार्ड एडवर्ड इरविन द्वारा प्रतिनिधित्व वाली सरकार ने गांधी जी के साथ विचार विमर्श करने का निर्णय लिया। यह इरविन गांधी की संधि मार्च 1931 में हस्ताक्षर किए थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन को बंद करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने सभी राजनैतिक कैदियों को रिहा करने के लिए अपनी रजामंदी दे दी। इस समझौते के परिणामस्वरूप गांधी को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में लंदन में आयोजित होने वाले गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। यह सम्मेलन गांधी जी और राष्ट्रीयवादी लोगों के लिए घोर निराशाजनक रहा , इसका कारण सत्ता का हस्तांतरण करने की बजाय भारतीय कीमतों एवं भारतीय अल्पसंख्यकों पर केंद्रित होना था। इसके अलावा , लार्ड इरविन के उत्तराधिकारी लार्ड विलिंगटन , ने राष्ट्रवादियों के आंदोलन को नियंत्रित एवं कुचलने का एक नया अभियान

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

आरंभ करदिया। गांधी फिर से गिरफ्तार कर लिए गए और सरकार ने उनके अनुयाईयों को उनसे पूर्णतया दूर रखते हुए गांधी जी द्वारा प्रभावित होने से रोकने की कोशिश की। लेकिन, यह युक्ति सफल नहीं थी।

हरिजन आंदोलन और निश्चय दिवस

1932 में, दलित नेता और प्रकांड विद्वान डॉ॰ बाबासाहेब अम्बेडकर के चुनाव प्रचार के माध्यम से, सरकार ने अछूतों को एक नए संविधान के अंतर्गत अलग निर्वाचन मंजूर कर दिया। इसके विरोध में दलित हतों के विरोधी गांधी जी ने सितंबर 1932 में छः दिन का अनशन ले लिया जिसने सरकार को सफलतापूर्वक दलित से राजनैतिक नेता बने पलवंकर बालू द्वारा की गई मध्यस्ता वाली एक समान व्यवस्था को अपनाने पर बल दिया। अछूतों के जीवन को सुधारने के लिए गांधी जी द्वारा चलाए गए इस अभियान की शुरूआत थी। गांधी जी ने इन अछूतों को हरिजन का नाम दिया जिन्हें वे भगवान की संतान मानते थे। 8 मई 1933 को गांधी जी ने हरिजन आंदोलन में मदद करने के लिए आत्म शुद्धिकरण का 21 दिन तक चलने वाला उपवास किया। यह नया अभियान दलितों को पसंद नहीं आया तथापि वे एक प्रमुख नेता बने रहे। डॉ॰ बाबासाहेब अम्बेडकर ने गांधी जी द्वारा हरिजन शब्द का उपयोग करने की स्पष्ट निंदा की, कि दलित सामाजिक रूप से अपरिपक्व हैं और सुविधासंपन्न जाति वाले भारतीयों ने पितृसत्तात्मक भूमिका निभाई है। अम्बेडकर और उसके सहयोगी दलों को भी महसूस हुआ कि गांधी जी दलितों के राजनीतिक अधिकारों को कम आंक रहे हैं। हालांकि गांधी जी एक वैश्य जाति में पैदा हुए फिर भी उन्होनें इस बात पर जोर दिया कि वह डॉ॰ अम्बेडकर जैसे दलित मसिहा के होते हुए भी वह दलितों के लिए आवाज उठा सकता है। [7] पूना संधी के बाद पुरी दुनिया जाना की गांधी नहीं डॉ॰ बाबासाहेब अम्बेडकर ही है दलितों के असली नेता। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हिन्दुस्तान की सामाजिक बुराइयों में में छुआछूत एक प्रमुख बुराई थी जिसके के विरूद्ध महात्मा गांधी और उनके अनुयायी संघर्षरत रहते थे। उस समय देश के प्रमुख मंदिरों में हरिजनों का प्रवेश पूर्णतः प्रतिबंधित था। केरल राज्य का जनपद त्रिशुर दक्षिण भारत की एक प्रमुख धार्मिक नगरी है। यहीं एक प्रतिष्ठित मंदिर है गुरुवायुर मंदिर, जिसमें कृष्ण भगवान के बालरूप के दर्शन कराती भगवान गुरूवायुरप्पन की मूर्ति स्थापित है। आजादी से पूर्व अन्य मंदिरों की भांति इस मंदिर में भी हरिजनों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध था।

केरल के गांधी समर्थक श्री केलप्पन ने महात्मा की आज्ञा से इस प्रथा के विरूद्ध आवाज उठायी और अंततः इसके लिये सन् 1933 ई0 में सविनय अवज्ञा प्रारंभ की गयी। मंदिर के ट्रस्टियों को इस बात की ताकीद की गयी कि नये वर्ष का प्रथम दिवस अर्थात 1 जनवरी 1934 को अंतिम निश्चय दिवस के रूप में मनाया जायेगा और इस तिथि पर उनके स्तर से कोई निश्चय न होने की स्थिति मे महात्मा गांधी तथा श्री केलप्पन द्वारा आन्दोलनकारियों के पक्ष में आमरण अनशन किया जा सकता है। इस कारण गुरूवायूर मंदिर के ट्रस्टियो की ओर से बैठक बुलाकर मंदिर के उपासको की राय भी प्राप्त की गयी। बैठक मे 77 प्रतिशत उपासको के द्वारा दिये गये बहुमत के आधार पर मंदिर में हरिजनों के प्रवेश को स्वीकृति दे दी गयी और इस प्रकार 1 जनवरी 1934 से केरल के श्री गुरूवायूर मंदिर में किये गये निश्चय दिवस की सफलता के रूप में हरिजनों के प्रवेश को सैद्वांतिक स्वीकृति मिल गयी। गुरूवायूर मंदिर जिसमें आज भी गैर हिन्दुओं का प्रवेश वर्जित है तथापि कई घर्मो को मानने वाले भगवान भगवान गुरूवायूरप्पन के परम भक्त हैं। महात्मा गांधी की प्रेरणा से जनवरी माह के प्रथम दिवस को निश्चय दिवस के रूप में मनाया गया और किये गये निश्चय को प्राप्त किया गया। 1934 की गर्मियों में, उनकी जान लेने के लिए उन पर तीन असफल प्रयास किए गए थे।

जब कांग्रेस पार्टी के चुनाव लड़ने के लिए चुना और संघीय योजना के अंतर्गत सत्ता स्वीकार की तब गांधी जी ने पार्टी की सदस्यता से इस्तीफा देने का निर्णय ले लिया। वह पार्टी के इस कदम से असहमत नहीं थे किंतु महसूस करते थे कि यदि वे इस्तीफा देते हैं तब भारतीयों के साथ उसकी लोकप्रियता पार्टी की सदस्यता को मजबूत करने में आसानी प्रदान करेगी जो अब तक कम्यूनिसटों, समाजवादियों, व्यापार संघों, छात्रों, धार्मिक नेताओं से लेकर व्यापार संघों और विभिन्न आवाजों के बीच विद्यमान थी। इससे इन सभी को अपनी अपनी बातों के सुन जाने का अवसर प्राप्त होगा। गांधी जी राज के लिए किसी पार्टी का नेतृत्व करते हुए प्रचार द्वारा कोई ऐसा लक्ष्य सिद्ध नहीं करना चाहते थे जिसे राज के साथ अस्थायी तौर पर राजनैतिक व्यवस्था के रूप में स्वीकार कर लिया जाए।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

गांधी जी नेहरू प्रेजीडेन्सी और कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के साथ ही 1936 में भारत लौट आए। हालांकि गांधी की पूर्ण इच्छा थी कि वे आजादी प्राप्त करने पर अपना संपूर्ण ध्यान केंद्रित करें न कि भारत के भविष्य के बारे में अटकलों पर। उसने कांग्रेस को समाजवाद को अपने उद्देश्य के रूप में अपनाने से नहीं रोका। 1938 में राष्ट्रपति पद के लिए चुने गए सुभाष बोस के साथ गांधी जी के मतभेद थे। बोस के साथ मतभेदों में गांधी के मुख्य बिंदु बोस की लोकतंत्र में प्रतिबद्धता की कमी तथा अहिंसा में विश्वास की कमी थी। बोस ने गांधी जी की आलोचना के बावजूद भी दूसरी बार जीत हासिल की किंतु कांग्रेस को उस समय छोड़ दिया जब सभी भारतीय नेताओं ने गांधी, जी द्वारा लागू किए गए सभी सिद्धातों का परित्याग कर दिया गया।[5]

परिणाम

भारत छोड़ो आन्दोलन

द्वितीय विश्व युद्ध 1939 में जब छिड़ने नाजी जर्मनी आक्रमण पोलैंड आरंभ में गांधी जी ने अंग्रेजों के प्रयासों को अहिंसात्मक नैतिक सहयोग देने का पक्ष लिया किंतु दूसरे कांग्रेस के नेताओं ने युद्ध में जनता के प्रतिनिधियों के परामर्श लिए बिना इसमें एकतरफा शामिल किए जाने का विरोध किया। कांग्रेस के सभी चयनित सदस्यों ने सामूहिक तौर पर अपने पद से इस्तीफा दे दिया। लंबी चर्चा के बाद, गांधी ने घोषणा की कि जब स्वयं भारत को आजादी से इंकार किया गया हो तब लोकतांत्रिक आजादी के लिए बाहर से लड़ने पर भारत किसी भी युद्ध के लिए पार्टी नहीं बनेगी। जैसे जैसे युद्ध बढता गया गांधी जी ने आजादी के लिए अपनी मांग को अंग्रेजों को भारत छोड़ो आन्दोलन नामक विधेयक देकर तीव्र कर दिया। यह गांधी तथा कांग्रेस पार्टी का सर्वाधिक स्पष्ट विद्रोह था जो भारतीय सीमा से अंग्रेजों को खदेड़ने पर लक्षित था।

गांधी जी के दूसरे नंबर पर बैठे जवाहरलाल नेहरू की पार्टी के कुछ सदस्यों तथा कुछ अन्य राजनैतिक भारतीय दलों ने आलोचना की जो अंग्रेजों के पक्ष तथा विपक्ष दोनों में ही विश्वास रखते थे। कुछ का मानना था कि अपने जीवन काल में अथवा मौत के संघर्ष में अंग्रेजों का विरोध करना एक नश्वर कार्य है जबकि कुछ मानते थे कि गांधी जी पर्याप्त कोशिश नहीं कर रहे हैं। भारत छोड़ो इस संघर्ष का सर्वाधिक शक्तिशाली आंदोलन बन गया जिसमें व्यापक हिंसा और गिरफ्तारी हुई। पुलिस की गोलियों से हजारों की संख्या में स्वतंत्रता सेनानी या तो मारे गए या घायल हो गए और हजारों गिरफ्तार कर लिए गए। गांधी और उनके समर्थकों ने स्पष्ट कर दिया कि वह युद्ध के प्रयासों का समर्थन तब तक नहीं देंगे तब तक भारत को तत्काल आजादी न दे दी जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बार भी यह आन्दोलन बन्द नहीं होगा यदि हिंसा के व्यक्तिगत कृत्यों को मूर्त रूप दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उनके चारों ओर अराजकता का आदेश असली अराजकता से भी बुरा है। उन्होंने सभी कांग्रेसियों और भारतीयों को अहिंसा के साथ करो या मरो (अंग्रेजी में डू ऑर डाय) के द्वारा अन्तिम स्वतन्त्रता के लिए अनुशासन बनाए रखने को कहा।

गांधी जी और कांग्रेस कार्यकारणी समिति के सभी सदस्यों को अंग्रेजों द्वारा मुबंई में 9 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिया गया। गांधी जी को पुणे के आंगा खां महल में दो साल तक बंदी बनाकर रखा गया। यही वह समय था जब गांधी जी को उनके निजी जीवन में दो गहरे आघात लगे। उनका 50 साल पुराना सचिव महादेव देसाई 6 दिन बाद ही दिल का दौरा पड़ने से मर गए और गांधी जी के 18 महीने जेल में रहने के बाद 22 फरवरी 1944 को उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी का देहांत हो गया। इसके छः सप्ताह बाद गांधी जी को भी मलेरिया का भयंकर शिकार होना पड़ा। उनके खराब स्वास्थ्य और जरूरी उपचार के कारण 6 मई 1944 को युद्ध की समाप्ति से पूर्व ही उन्हें रिहा कर दिया गया। राज उन्हें जेल में दम तोड़ते हुए नहीं देखना चाहते थे जिससे देश का क्रोध बढ़ जाए। हालांकि भारत छोड़ो आंदोलन को अपने उद्देश्य में आशिंक सफलता ही मिली लेकिन आंदोलन के निष्ठुर दमन ने 1943 के अंत तक भारत को संगठित कर दिया। युद्ध के अंत में, ब्रिटिश ने स्पष्ट संकेत दे दिया था कि संत्ता का हस्तांतरण कर उसे भारतीयों के हाथ में सोंप दिया जाएगा। इस समय गांधी जी ने आंदोलन को बंद कर दिया जिससे कांग्रेसी नेताओं सहित लगभग 1,00,000 राजनैतिक बंदियों को रिहा कर दिया गया।[3]

महात्मा गांधी भारत की एक महान् विभूति ही नहीं, वरन् विश्व की महानतम विभूतियों में गिने जाते है। दक्षिण अफ्रीका पहुंच कर उन्होंने भारत मूल के लोगो को बड़ी दयनीय अवस्था में देखा। उन्होंने उनकी दशा सुधारने का फैसला कर लिया और भारतीयों को उनके अधिकारों का बोध कराया। उन्होने उनमे

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

जागृति लाकर उन्हें संगठित किया। दक्षिण अफ्रीका के आन्दोलन में सफलता के बाद गाधी जी भारत लौट आए। वे कांग्रेस पार्टी के सदस्य बन गए उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने अहिंसा का मार्ग अपनाया इसके साथ ही उन्होंने काग्रेस पार्टी के सामने - समाज सुधार और हिन्दू - मुस्लिम एकता जैसे रचनात्मक कार्यो को सुझाया। छुआछूत के खिलाफ उन्होंने जोरदार आवाज उठाई और अछूतो को 'हरिजन' जैसा आदरणीय सबोधन दिया। हिन्दू - मुस्लिम एकता की रक्षा पर तो उन्होने अपनी जान तक दे दी। ब्रिटिश सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने का भरसक प्रयास किया। कई बार उन्होने गाँधी जी तथा अन्य भारतीय नेताओं को पकड कर जेल में डाल दिया। लेकिन उन्होंने भारत को स्वतन्त्रता दिलवा दी। 15 अगस्त , 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ।

निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए आंदोलन की अगुवाई की थी। महात्मा गांधी की शांतिपूर्ण और अहिंसक नीतियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता संघर्ष का आधार बनाया। मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को हुआ था। दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आने के बाद, गोपाल कृष्ण गोखले ने महात्मा गांधी को भारत में चिंताओं और संघर्ष से परिचित कराया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन के अहिंसक अभियानों की एक श्रृंखला शुरू की गई थी। विरोध मुख्य रूप से नमक कर, भूमि राजस्व, सैन्य खर्चों को कम करने आदि के खिलाफ थे।
चंपारण और खेड़ा आंदोलन 1918 में खेड़ा सत्याग्रह और चंपारण आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए गांधी के पहले महत्वपूर्ण कदमों में से एक था। महात्मा गांधी गरीब किसानों के अनुरोध पर 1917 में चंपारण (बिहार) गए, जहां उन्होंने ब्रिटिश नील उत्पादकों से अपनी जमीन के 15% हिस्से पर नील उगाने और किराए पर पूरी फसल के साथ हिस्सा लेने की मांग की। एक विनाशकारी अकाल की पीड़ा में अंग्रेजों ने एक दमनकारी कर लगाया जो उन्होंने बढ़ाने पर जोर दिया। साथ ही गुजरात के खेड़ा में भी यही समस्या थी। इसलिए, महात्मा गांधी ने गांवों को सुधारना, स्कूलों का निर्माण, गांवों की सफाई, अस्पतालों का निर्माण और कई सामाजिक कुरीतियों का खंडन करने के लिए गांव के नेतृत्व को प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया। ब्रिटिश पुलिस ने अशांति पैदा करने के आरोप में उन्हें गिरफ्तार कर लिया। सैकड़ों लोगों ने पुलिस थानों और अदालतों के बाहर विरोध और रैली की। उन्होंने उसकी रिहाई की मांग की, जिसे अदालत ने अनिच्छा से मंजूर कर लिया। गांधी ने उन सभी जमींदारों के खिलाफ सुनियोजित विरोध का नेतृत्व किया, जो गरीब किसानों का शोषण कर रहे थे। अंत में महात्मा गांधी किसानों को सुधारने की अपनी मांगों से सहमत होने के लिए अंग्रेजों को मजबूर करने में सफल हो गए। इस आंदोलन के दौरान लोगों ने मोहनदास करमचंद गांधी को बापू कहकर संबोधित किया। रवींद्रनाथ टैगोर ने गांधी को वर्ष 1920 में महात्मा की उपाधि से सम्मानित किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी का पहला आंदोलन असहयोग आंदोलन के साथ शुरू हुआ। इस आंदोलन का नेतृत्व महात्मा गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किया था। यह अहिंसात्मक प्रतिरोध के देशव्यापी आंदोलन की पहली श्रृंखला थी। आंदोलन सितंबर 1920 से फरवरी 1922 तक चला। अन्याय के खिलाफ लड़ाई में, गांधी के हथियार असहयोग और शांतिपूर्ण प्रतिरोध थे। लेकिन नरसंहार और संबंधित हिंसा के बाद, गांधी ने अपना ध्यान पूर्ण स्व-शासन प्राप्त करने पर केंद्रित किया। यह जल्द ही स्वराज या पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता में बदल गया। इस प्रकार, महात्मा गांधी के नेतृत्व में, कांग्रेस पार्टी को नए संविधान के साथ स्वराज के उद्देश्य से फिर से संगठित किया गया। महात्मा गांधी ने स्वदेशी नीति को शामिल करने के लिए अपनी अहिंसा नीति को आगे बढ़ाया, जिसका अर्थ था विदेशी निर्मित वस्तुओं की अस्वीकृति। महात्मा गांधी ने सभी भारतीयों को ब्रिटिश निर्मित वस्त्रों के बजाय खादी पहनने के लिए संबोधित किया। उन्होंने सभी भारतीयों से भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को समर्थन देने के लिए खादी की कताई के लिए कुछ समय बिताने की अपील की। यह महिलाओं को आंदोलन में शामिल करने की नीति थी, क्योंकि इसे एक सम्मानजनक गतिविधि नहीं माना जाता था। इसके अलावा, गांधी ने ब्रिटिश शैक्षिक संस्थानों का बहिष्कार करने, सरकारी नौकरियों से इस्तीफा देने और ब्रिटिश उपाधियों को छोड़ने का भी आग्रह किया। जब आंदोलन को बड़ी सफलता मिली, तो उत्तर प्रदेश के चौरी चौरा में हिंसक झड़प के बाद यह अप्रत्याशित रूप से समाप्त हो गया। इसके बाद, महात्मा गांधी को भी गिरफ्तार कर लिया गया और 6 साल कैद की सजा सुनाई गई।[2] भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दो खंडों में विभाजित थी। इसके अलावा, हिंदू और मुस्लिम लोगों के बीच समर्थन भी टूट रहा था। दांडी मार्च महात्मा गांधी 1928 में फिर से सबसे आगे लौट आए। 12 मार्च, 1930 को गांधी ने नमक पर कर के खिलाफ एक नया सत्याग्रह शुरू किया। अहमदाबाद से दांडी तक पैदल चलकर, अपने नमक बनाने के अधिकार से गरीबों को वंचित करने वाले कानून को तोड़ने के लिए, उन्होंने ऐतिहासिक दांडी मार्च की शुरुआत की। गांधी ने दांडी में समुद्र तट पर नमक कानून तोड़ा। इस आंदोलन ने पूरे राष्ट्र को उत्तेजित किया और इसे सविनय अवज्ञा आंदोलन के रूप में जाना जाने लगा। 8 मई, 1933 को, उन्होंने हरिजन आंदोलन में मदद करने के लिए आत्म-शुद्धि का 21 दिवसीय उपवास शुरू किया। 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रकोप के बाद भारत छोड़ो आंदोलन महात्मा गांधी फिर से राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय हो गए। 8 अगस्त, 1942 को गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान किया। गांधी की गिरफ्तारी के तुरंत बाद, देश के बाहर अव्यवस्थाएं फैल गईं और कई हिंसक प्रदर्शन हुए। स्वतंत्रता संग्राम में भारत छोड़ो सबसे शक्तिशाली आंदोलन बन गया। पुलिस की गोलियों से हजारों स्वतंत्रता सेनानी मारे गए या घायल हुए, और सैकड़ों हजारों

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने सभी कांग्रेसियों और भारतीयों से परम स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अहिंसा और कारो यारो (करो या मरो) के माध्यम से अनुशासन बनाए रखने का आह्वान किया। 9 अगस्त, 1942 को, महात्मा गांधी और पूरी कांग्रेस कार्य समिति को मुंबई में गिरफ्तार किया गया। उनकी बिगड़ती सेहत के मद्देनजर, उन्हें मई 1944 में जेल से रिहा कर दिया गया क्योंकि अंग्रेज़ नहीं चाहते थे कि वे जेल में मरें और राष्ट्र को नाराज़ करें। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को सत्ता हस्तांतरित करने के स्पष्ट संकेत दिए जाने के बाद, गांधी ने लड़ाई बंद कर दी और सभी कैदियों को रिहा कर दिया गया। विभाजन और भारतीय स्वतंत्रता 1946 में, सरदार वल्लभभाई पटेल के अनुनय-विनय पर, महात्मा गांधी ने गृहयुद्ध से बचने के लिए भारत के विभाजन और ब्रिटिश कैबिनेट द्वारा पेश की गई स्वतंत्रता के प्रस्ताव को अनिच्छा से स्वीकार कर लिया। स्वतंत्रता के बाद, गांधी का ध्यान शांति और सांप्रदायिक सद्भाव में बदल गया। उन्होंने सांप्रदायिक हिंसा को खत्म करने के लिए उपवास किया और मांग की कि विभाजन परिषद ने पाकिस्तान को मुआवजा दिया। उनकी माँगें पूरी हुईं और उन्होंने अपना अनशन तोड़ दिया। इस प्रकार, मोहनदास करमचंद गांधी अंग्रेजों से लड़ने के लिए पूरे देश को एक छत्र के नीचे लाने में सक्षम थे। गांधी ने अपनी तकनीकों को धीरे-धीरे विकसित और सुधार किया, यह आश्वासन देने के लिए कि उनके प्रयासों ने महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।[1]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1) क्रान्त (2006) स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास 1 (1 सं॰) नई दिल्लीः प्रवीण प्रकाशन प॰ 107

2) क्रान्त , मदनलाल वर्मा (2006) स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास 2 (1 सं॰) नई दिल्लीः प्रवीण प्रकाशन प॰ 512

3) भारतन कुमारप्पा , संपादक फॉर पसिफिस्ट्स एमयकेय द्वारा लिखित। गांधी , नवजीवन प्रकाशन हाउस , अहमदाबाद , भारत , 1949

4) आरगांधी , पटेल : एक जीवन , pp. 230-32 .

5) आर . गांधी , पटेल : एक जीवन , pp. 283-86

6) महात्मा गांधी की संग्रहित रचनाएं वॉल्यूम 5 पेज 410

7) जैक होमर , गाँधी के पाठक , pp. 324-6

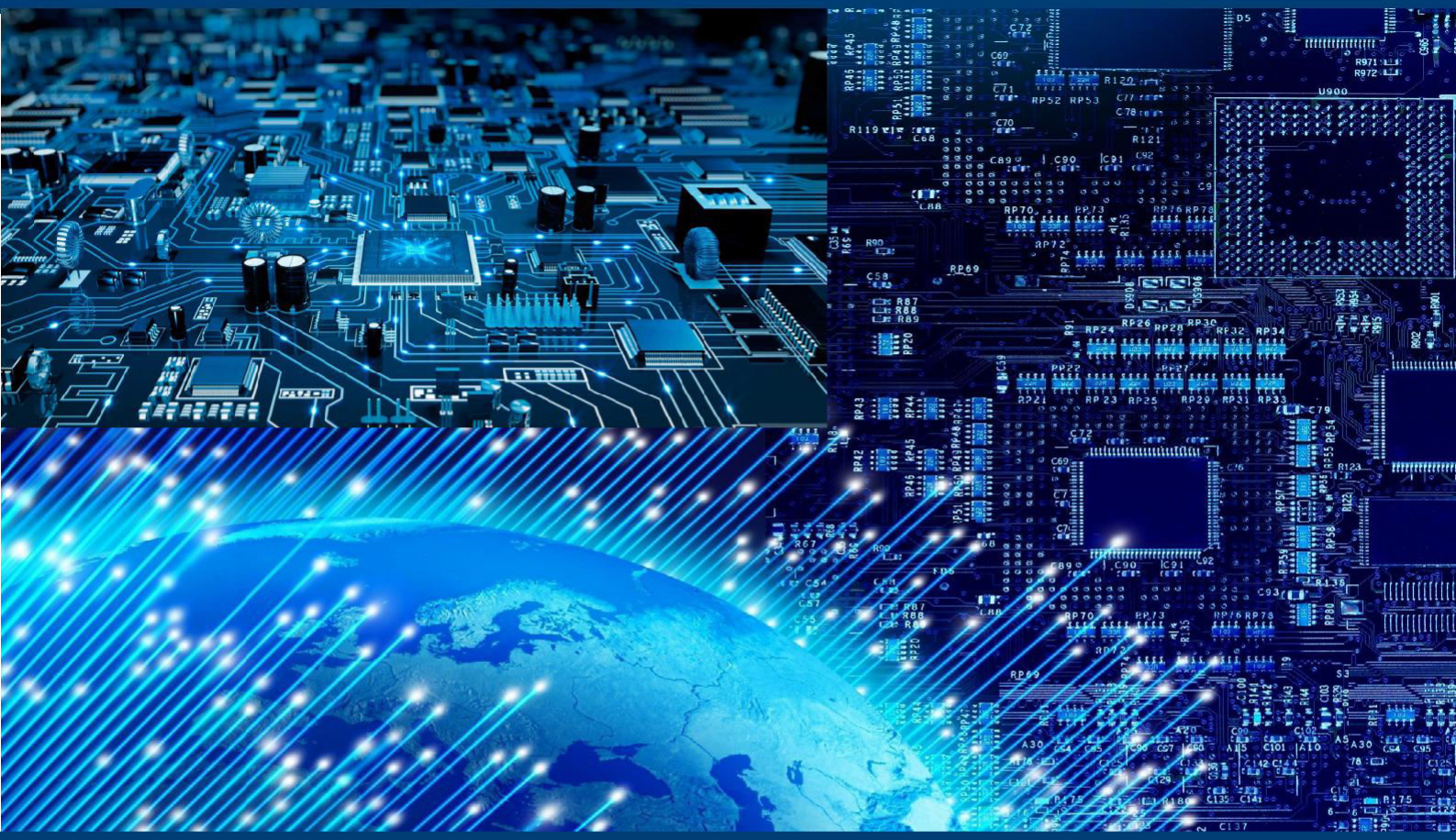

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |